Vol III Issue I Feb 2013
Impact Factor : 0.2105
ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue.1,Feb. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

अज्ञेयजी के यात्रा-साहित्य में प्रयोग-धार्मिता

सुनिता रविद्र सुर्यवंशी

श्रीपतराव कदम महाविद्यालय़
मु . पो . शिरवऴ ता . कंडाळा जि . सातारा़ महाराष्ट्र (भारत)

सारांशः

"आज्ञेय तुम्हारा चरित्र
आप ही प्रयोग है |
साहित्य प्रयोगशील हो
सहज संभाव्य है |"

अज्ञेयजी का पूरा नाम है सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेय | अज्ञेयजी हिंदी भाषा है और हिंदी भाषी क्षेत्र में अपने नाम के साथ पिता का नाम लिखने की पध्दती नही है | लेकीन अज्ञेय जी पूरा नाम लिखने के लिए हमेशा अग्रही रहें | अज्ञेयजी के इसी भूमिका न प्रयोग धर्मिता दिखायी देती है | हिंदी साहित्य क्षेत्र में अज्ञेयजी एक महान साहित्यकार है इसमें कोई दो राय नही है | अज्ञेयजी के इसी अज्ञेयजी एक महान साहित्यकार है इसमें कोई दो राय नहीं है | अज्ञेयजी के इसी साहित्यिक उपलब्धी में उनके पिताजी के संस्कार महत्वपूर्ण है | इसलिए शायद अज्ञेयजी अपने नाम के साथ पिताजी का नाम लिखने के अग्रही रहे होंगे |

प्रस्तावना -

अज्ञेयजी का जन्म गोरखपुर के देवरिया जिले के अंतर्गत कसाया नामक गॉव में मार्च **1911** ई . खो हुआ | पिता हीरानंद शास्त्री पूरातत्व विभाग में एक उच्च पदाधिकारी थे | सरकारी नौकरी के कारण परिवार को कई स्थानों में घुमना पडा | इसलिए बचपन से ही अज्ञेयजी को भारत देश के विविध स्थानों में घुमना पडा | इसलिए बचपन से ही अज्ञेयजी को भारत देश के विविध स्थानों में घुमने का अवसर मिलता रहा | शायद बाल्यवस्था कि यह भटकन ही आगे चलकर रूचि में परिवर्तित हुई | हिंदी साहित्य के यात्रा साहित्य में अज्ञेयजी पहले दर्जे के यायावर माने जाते है | जो व्यक्ति घुमक्कड होता है विविधता के दर्शन होने के कारण वह उतना ही प्रयोगधर्मि होता जाता है | इसी कारण अज्ञेयजी के साहित्य में विविध विधाओं में सभी स्तरों पर नर्येनये प्रयोग दिखायी देते है | अज्ञेयजी की शिक्षा भी विभिन्न स्थानों पर संपन्न हुई | श्रीनगर एवं जम्मु में संस्कृत फारशी और अंग्रेजी कि प्रारंभिक शिक्षा मिली नालंदा एवं पटना में बॅगला का ज्ञान अर्जित किया | हायस्कुल की शिक्षा पंजाब से इंटरसाईन्स मद्रस से बी . एस . सी लाहोर से की |

अज्ञेयजी का कांतिकारी जीवन सन **1930** से शुरू होता है | उन्हें कई वार जेल जाना पडा | सन **1929** से **1936** तक का काल अज्ञेयजी के लिए अत्यंत संघर्ष एवं कष्टपूर्ण रहा | उन्होंने लगभग सात वर्षो तक कांतिकारी जीवन जिया | स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार के रेडिओ समाचार विभाग में नौकरी की | कॅलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति का अभ्यास किया | कुछ वर्षो तक विशाल भारत दिनमान नया प्रतीक थाट एवं नवभारत टाईम्स पत्रिकाओं में संपादन कार्य किया | इसी पृष्ठभूमि में अज्ञेयजी ने कविता कहानी उपन्यास निबंध आलोचना संस्मरण यात्रावृत्त नाटक आदि विविध विधाओं में लेखन किया | उनके साहित्य में स्वतंत्र विषय स्वतंत्र भाषा प्रतिक विर्म्वविधान उपमार्नयोजना नई छंर्दयोजना नूतनशैली आदि की कलात्मक खूबियॉ दिखाई देती है | इन विभिन्न स्तरों पर उन्होंने नर्येनये प्रयोग किए है | अज्ञेयजी के साहित्य से ही हिंदी साहित्य में एक नया मोड उपस्थित हुआ है | उनके साहित्य में व्यक्तिवाद अस्तित्ववाद मानवतावाद रहस्यवाद वौद्धिकता राष्ट्रीयता प्रेम सौंदर्यानुभूति स्त्रीविमर्श आत्मचिंतन वौद्धिकचिंतन आदि पक्ष का वहु आयामी चित्रण हुआ है | व्यापक दृष्टीकोन और वौद्धिक चिंतन एवं संवेदना के कारण उनका साहित्य फलक अत्यंत व्यापक रूप लिए हुए है | ऐसे महान साहित्यकार कि मृत्यु **4** अप्रैल **1987** को हुई | 'आँगन के पार द्वार' पर इन्हे साहित्य अकादमी का तथा 'कितनी नावों में कितनी वार' पर ज्ञानपीठ का पुरस्कार मिला |

विविधमुखी प्रतिभा के धनी अज्ञेयजी यार्त्रासाहित्य में भी सर्वश्रेष्ठ रहे है | युरोप पूर्व एशिया जपान अमेरिका आदि देशों का भ्रमण करने तथा वहॉ के साहित्य तथा समाजजीवन का सूक्ष्म अवलोकन करने में भी उन्होंने काफी समय विताया | परिणाम स्वरूप विविध प्रकार के अनुभवों से उनका जीवन समृद्ध वन गया | और इन्ही अनुभवों का सुंदर अविष्कार अज्ञेयजी के विविध रचनाओं में हुआ है | आशय तथा अभिव्यक्ति कि जितनी विविधता अज्ञेयजी के साहित्य में देखने को मिलती है उतनी हिंदी साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है |

आधुनिक हिंदी गद्यः साहित्य में दो प्रमुख विभाग दृष्टीगोचर होते है | एक कथात्मक गद्य और दो कथेत्तर गद्य | कथात्मक गद्य में कहानी उपन्यास नाटक एकांकी साहित्य विधाऍ आती है | इसमें काल्पनिकता के आधार पर कथा कि निर्मिति होती है | तो कथेत्तर गद्य में आत्मकथा जीवनी रेखाचित्र रिपोर्ताज संस्मरण यात्रावर्णन आदि साहित्यविधाऍ आती है | कथेत्तर गद्य साहित्य में जीवन का यथार्थ होता है | इसमें यथार्थ से यथार्थ कि यात्रा होती है |

यात्रा साहित्य में जीवन का यथार्थ होता है | यात्रा मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग है | यात्रा जीवन को परिपूर्ण वनाती है |

'चलना जीवन कि कहानी

Title :अज्ञेयजी के यात्रा-साहित्य में प्रयोग-धार्मिता
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] सुनिता रविद्र सुर्यवंशी **yr:2013 vol:3 iss:1**

रूकना मौत कि निशानी |'

मनुष्य को जीवन-सृष्टीचक के अनुसार चलते रहना चाहिए | काल गतिशील है वह किसी के लिए नही रूकता | इसलिए काल की गतिशिलता के साथ सृष्टी में भी परिवर्तन होता है | नित नयी सृष्टी के दर्शन हमें होते है | इस असीम नये दृष्टीसौंदर्य को पाना इसे देखना प्राचीन काल से मनुष्य की लालसा रही है | मनुष्य जीवन कि अपनी सीमा है | और इस असीम सृष्टी संसार में स कुछ ही प्राकृतिक सौंदर्य का लाभ मनुष्य उठा पाता है जैसे वहती नदी के कुछ जल कण |

रोज मर्रा कि जिंदगी संसारिक कामकाजों से कुछ समय निकालकर नये माहोल में जाने की यात्रा करने की मनुष्य की आदत प्राचीन काल से रही है |

यात्रा करने के मनुष्य के अनेक प्रयोजन रहे है | इन यात्राओं के अनुभवों को दुसरों से कहना यह मनुष्य कि स्वाभाविक मानसिकता रही है | इन यात्राओं के अनुभवों को जब से लिखित रूप से अभिव्यक्त किया जाने लगा तब से यात्रा साहित्य का जन्म हुआ | यात्रा साहित्य का बीजारोपन प्राचीन ग्रंथो में हुआ है | वेद रामायण महाभारत पुराण साहित्य में भी यात्रा साहित्य के वर्णन मिलते है |

आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास में डॉ . सुर्यनारायण रणसुभेजी ने यात्रा साहित्य के बरे में लिखा है - "आधुनातन वैज्ञानिक खोजों के कारण यातायात के साधनों में खूब वृद्धि हुई | परिणाम अलगअलग प्रदेशों के लोग एक दूसरे के सम्पर्क में आने लगे | एक दूसरे कि संस्कृति का परिचय होने लगा | अन्य प्रदेशों के लोगों का वहॉ की संस्कृति तथा रूढि परम्पराओं का परिचय अपने प्रदेश के लोगों को करा देने की प्रवृत्ति बढने लगी | सजग और संवेदनशील कथाकार यात्रा वर्णन को नीरस न बनाकर उसे अधिक रसर उत्सुकता से परिपूर्ण और ज्ञानवर्धक बनाने लगा |"

अज्ञेयजी ने हिंदी यात्रा साहित्य को समृध्द करते हुए उसे नये आयास दिये है | डॉ . सुर्यनारायण रणसुभेजी ने यार्त्रासाहित्य के बारे में लिखा है - "हिन्दी यार्त्रा साहित्य को एक नयी दिशा देने का श्रेय अज्ञेय को है | इनके यात्रा वर्णन में वैयक्तिकता अधिक है | इनके यार्त्रावर्णन मात्र परिचयात्मक नही वे एक पूरी कलाकृती का रूप धारण कर लेते है |"

अज्ञेयजी ने दो यात्रा वृत्तांत लिखे है -

1 . अरे यायावर रहेगा याद **(1953)**
2 . एक बूँद सहसा उछली **(1960)**

यह दोनों यात्रावृत्त अपनी अलग विशेषता लिए हुए है |

3 . 'भावना डायरी अथवा यह लोग बुक है | यात्रा के पर्थचिन्ह अनुकूल-प्रतिकूल स्थितियॉ तथा धाराएँ जोखम भटकन आदि का वर्णन इसमें है |

प्राकृतिक सौंदर्य के मनोरम शब्द चित्रों रोचक घटनाओं भावप्रधान रचना शैली में प्रस्तुत ये रचनाएँ पाठकों के लिए निश्चित बढने लायक है |

वैसे देखा जाय ताप अज्ञेयजी के संपूर्ण रचनाओं में जीवन के प्रति आसक्ति के भाव को ही देखा गया है | जीवन के प्रति होने वाली आसक्ति मनुष्य को अन्तःदृष्टि देती है | 'एक बूँद सहसा उछली' में अज्ञेयजी ने समकालीन युगेपीय लोगों के मनोवृत्ती का चित्रण किया है | 'अरे यायावार रहेगा याद' में प्रकृति के सौंदर्य का हुबहु चित्रण हुआ है | अज्ञेयजी के 'यार्त्रासंस्मरण' एक समृध्द संवेदनशील व्यक्तित्व कि सहज प्रकिया है | अज्ञेयजी भाषा के बारे में अधिक सजग कलाकार है | उन्होंने शालीनता तथा अनौपचारिकता के बीच संतुलन का ध्यान बनाये रखा है | उनके यात्रावृत्तों में मानसिक प्राकृतिक शास्त्रों दीक्षित एक असाधारण रूचि संपन्न व्यक्तित्व का जीवन-स्पर्श मिलता है | लेकिन उसमें कही भी पांडित्य प्रदर्शन का भाव नहीं है | बीच - बीच हल्के विनोद विवेचन को और निर्मल भावस्पर्शी बना देते है |

अज्ञेयजी ने कला साहित्य और दर्शन की समस्याओं को बराबर एक समृद्ध रूप देखने का प्रयत्न किया है | यात्रा संस्मरणों में अपने नीजि जीवन संबंध कुछ परिस्थितिओं का भी कहीकही उल्लेख किया है | अज्ञेयजी के तरह पर्यटक अपने यार्त्रास्थल के धर्म दर्शन साहित्य भाषा इतिहास राजनीति का भी अध्ययन करता है | नृत्य संगित चित्रकारी से प्रेम होने के कारण वह ऑपेरा नाटयगृह तथा म्युझियमों में चक्कर काटते है | तुलनात्मक दृष्टि के कारण भारत कि कमियॉ अज्ञेयजी को भले ही ना रूचे लेकिन वे वहॉ नही बसना चाहते |

अज्ञेयजी स्वयं को एक यायावार के रूप में देखते है | उनका जीवन एक अविराम यात्रा ही है | यात्रा में उनकी दृष्टि प्रकृति के वाहकय सौंदर्य पर ही टिकती सो बात नही वह स्थान विशेष के मानव जीवन के त्रुटियों - अभावों पर भी टिकती है | वे सिर्फ भूगोल में ही नही इतिहास में भी दिलचस्पी रखते है | उनकी भाषा शैली में विभिन्न भाषाओं के शब्द मुहावरें लोकोक्तियॉ और वाक्यांश सहज सुलभ आये है | स्वातंत्र्योत्तर कालीन यार्त्रासाहित्य के प्रगति में अज्ञेयजी ने पन रचनाओं के साथ उपकार किया है |

पहले यात्रा वर्णन में यात्रा अनुभव के रेखाचित्र अलंकारिक रूप में प्रस्तुत किये है | इसमें विविध प्रकार के दृश्यों के चित्र सम्मिलित है | इसमें आसाम कश्मीर तथा कुलुघाटी का सुंदर चित्रण किया गया है | इसके बारें में हिंदी का आधुनिक यार्त्रासाहित्य इस ग्रंथ में डॉ . प्रतापपाल शर्मा लिखते है - "यह कृति वहाय गहात के स्थूल दृश्यों के चित्रण के साथ ही साथ अंतर जगत की सूक्ष्म मनोवृत्तियों को भी विश्लेषित करती है |" इस कृति के प्रकाशकीय व्यक्तत्व में लिखा है - "कुछ लेखक स्थूल ऑखों से जो कुछ देखते है वही दिखाकर संतुष्ट हो जाते है | कुछ नर्येनये परिवशो में केवल ऊपर को देखते बखारते है | यायावर अपने पाठक सहयात्री को इन दोनों खइयों से बचा ले जाता है जिसका प्रकाश बाहर की दुनिया को ही नही पाठकों को भी बदल देता है |"

'अरे यायावर रहेगा याद' इस यात्रा रचना के **195** पृष्ठ है | इसमें कुल आठ यात्रा वर्णन संग्रहित है | पहले यात्रावृत्त 'परशुराम से तूरखम' में अज्ञेयजी ने पूर्वी सीमाप्राप्त आसाम से पश्चिमोत्तर सीमान्त तक की यात्रा का सुंदर वर्णन किया है | तो दूसरे यात्रावृत्त 'देवताओं के अंचल में' उन्होंने कुल्लु मनाली क्षेत्र कि प्रकृति एवं संस्कृति के बौद्धिक धरातल पर सुंदर चित्रण किया है | तो 'मांडुली' यात्राकार कि सांस्कृतिक चेतना को साकार करनेवाला असमियॉ जीवन से सम्बन्ध यात्रावृत्त है 'किरणों कि खोज' अज्ञेयजी का वैज्ञानिक अीभरूचि को प्रकट करनेवाला अनुसंधानात्मक यात्रावृत्त है | इसमें कश्मीर घाटी का सुन्दर विंव उपस्थित किया है | तो 'मौत कि घती में' अज्ञेयजी कि रोहूतंग जोत ह्यघाटीह कि साहसिक यात्रा का लेर्खाजोखा है | इसीप्रकार 'वहता पानी निर्मला' आसाम की बाढग्रस्त एवं प्राकृतिक आपदाओं कि कहानी बतानेवाला यात्रावृत्त है | तो 'सागर्रसेवित 'मेघ मेखलित' पूर्ण विचारात्मक शैली में प्रस्तुत यात्रावृत्त है |

दूसरा यात्रा वर्णन विदेश का है | स्विझरलैण्ड वर्लिन पॅरिस का यात्रा वृत्त है | अपनी यात्रा वर्णनों कि विशेषता 'एक बूँद सहसा उछली' के निवेदन में अज्ञेयजी ने कहा है - "यह पुस्तक मार्गदर्शिका नही है | . . . . वास्तवमें ऐसे पाठक (जो युरोप मौसम कपडे खरीदने योग्य चीजे आदि के संबंध में मार्गदर्शन चाहनेवाला) को यह पुस्तक पढने कि कोई आवश्यकता नही | . . . . मानव में मेरी श्रद्धा है | मानवमात्र को में अभिजात मानता हूँ | मेरा परिश्रम उसके काम आवें इसें मै अपनी सफलता मानता हूँ |"

अंबेडकरजी के दार्शनिक-चिंतन में प्रयोग-धार्मिता

अज्ञेयजी के इस यात्रा वर्णन में व्यापक मानवता के दर्शन होते है | स्विझरलैण्ड के प्राकृतिक सौंदर्य और भारत के प्राकृतिक सौंदर्य कि वह तुलना नही करना चाहते लेकिन भारत के प्रति उन्हें विशेष लगाव रहा है | अज्ञेयजी ने लिखा है "यह कहने को मन नहीं हुआ की स्विझरलैण्ड युरोप का कश्मीर है या कि कश्मीर भारत का स्विझरलैण्ड है | स्वीस दृश्यों को देखकर उसका अतिशय सौंदर्य मन में सजीर्वसा जमता नही है | कुछ ऐसा जान पडता है कि रंगीन चित्र देख रहे है | . . . . यों कुछ ऐसे अति उत्साही भारतीय भी मुझे मिले जो स्विझरलैण्ड के सौंदर्य के सामने दुनिया भर के पहाडों को फूँक से उडा देते है | भारत को हिमालय कि तो बात ही क्या ?"

यह नौकायात्रा या जलयात्रा वर्णन के अंतर्गत है | **206** पृष्ठ कि इस पुस्तक में लेखक के **22** यात्रा वरत्त अपने वहुरंगी दृश्यों के साथ चित्रित है | अज्ञेयजीने युरोपीय देशों को सर्वथा नयी दृष्टी से देखा है | इस कृति में चत्रित किये गये इटली स्विझरलैण्ड़ जर्मनी फान्स स्वीडन तथा आईसलैण्ड आदि विभिन्न देशों के चित्र एक ओर जहॉ अधुनातन माव कि जिन्दगी के स्वरूपों को व्याख्यायित करते है वहॉ दूसरी ओर वे विभिन्न प्रकृतिक दृश्यों को साकार करते हुए ईश्वर कि विराट सत्ता के उद्घोषक भी है |

'धर्म विश्वासों कि गोधूली' में अज्ञेयजी ने जहॉ आयरी लोर्कजीवन विश्वार्सपथाएँ जादूटोना आदि का सुस्पष्ट अंकन किया है तो 'युरोप का स्नायु इस नगर के मूल में अन्तर्निहित अन्तरराष्ट्रीय राजनीति एवं महायुध्द जन्य वर्तमान स्थितियों का स्पष्ट व्यौरा दिया है | इटली के रोम को उन्होंने यूरोप कि अरावली वताते हुए वहॉ के नगर सौंदर्य और स्थापत्य कि भूरिभूरि प्रशंसा की है तो किरंजे को युरोप कि पुष्पावती की संज्ञा से विभूषित कर वहॉ की कोमल प्रकृति को अपनी लेखनी का आधार वनाया है | संपूर्ण कृति में कही अज्ञेय मात्र द्रष्टा है तो कही स्पष्ट आलोचक कही उनका संवेदनशील कवि वोल रहा है तो कही अवोला दर्शन |

अज्ञेयजी ने राइन नदी का चित्रण इस प्रकार किया है "राईन नदी का घाट इधर आकर कुछ चौडा हो जात है और पहाडियॉ भी कुछ विरल हो जाती है फिर भी प्रदेश का रूप वहुत अधिक नहीं वदलता | शिखरों पर टंगे हुए मीनारदार छोटे वडे दुर्ग और उनकी झुकी हुई लाल छते आकाश कि नीलिमा वन तरूओं की श्यामलता और नदी के जहर मोहरा रंग के वीच अपनी अलग शान रखतीहै | नदी पर चलनेवाले स्टीमरों कि झकाझक सफेदी में जो चटक हल्कापन है वह सारे दृश्य कि भव्यता को कम नही कर पाता क्योंकि ये दूर्ग शूर वीरता के इतिहास के वोझ से उसे दवाये रहते है | दुर्ग मण्डित शिखरों के वीच में से वलखाती हुई नदी मानो वहुर्तसेपार्णिप्रार्थी सूरमाओं के वीच में से वचकर निकल जानेवाली स्वयंवरा हो |"

यात्र साहित्य के शिल्प विधान में प्रयोग धर्मिता ः

भाषा प्रयोग :

भावों कि अभिव्यक्ति के लिए भाषा अत्यंत महत्वपूर्ण है | भाषा को विचारों एवं भापों कि संवाहिका माना गया है | अभिव्यक्ति की सम्प्रेषणीयता कि दृष्टि से भी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है | वास्तव में भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी विधा का रचयिता अपने हृदय के भावों को सामान्य पाठकों तक पहुँचता है |

अज्ञेयजी ने अपने यात्रा वर्णन में विविध भापा के शव्द प्रयोग किये है | जिस प्रकार संत कवीर जिस प्रदेश में चले जाते थे उसी प्रदेश के शव्दों को अपनाते थे इसलिए कवीर की भापा में विविध शव्दों का प्रयोग दिखाई देता है उसी प्रकार अज्ञेयजी के साहित्य में भी विविध प्रदेश के शव्दों का प्रयोग दिखाई देता है | विभिन्न विदेशी भाषाओं के शव्द यात्रावर्णन में मिलते है |

जैशे - इटालियन शव्द - वेकियो ह्यपुरानाह पैलात्सो ह्यमहलह पासियो ने ह्यसराय का होटलह
जर्मन शर्व्द पोस्त वाल्ड (वन) आदि
हिंदीत्तर भारतीय भाषाओं के शव्द प्रयोग -
वॅगला शव्द - "तोमार दुर्निवार चरणेर अलक्षित चला ओ की मोशाय एक वार ओठा एक वार नार्माआमी पारीना"
असमियॉ शव्द - गुवा (सुपारी) वडडिक्डरी ना आयोनि विड्डान मानुह भाल कठा (ठीक वात है) स्व निर्मित एवम्स्वेच्छया शव्द प्रयोग - लिपस्टिक के लिए उन्होंने 'मुख रंजनी' शव्द की स्वेच्छ निर्मिती की है | इसीप्रकार छात्री एवं विद्यार्थिनी जैसे स्वेच्छा शव्द है |

विविध शैलियों का प्रयोग -

1)गद्य पद्य मिश्रित शैली का प्रयोग -

अज्ञेयजी ने अपने यात्रा साहित्य मेंप्रकृति का वर्णन करने के लिए काव्य का प्रयोग किया है |
अज्ञेयजीने अपने यात्रावृत्त में खुले आकाश को देख कविता करने ल्एगते है -
"यह ऊपर आकाश नहीं है
रूप हीन आलोक मात्र | हम अचल पंख
तिरते जाते है |
भार मुक्त
नीचे यह ताजी धुनी रूई की उजली
वादल सेज वछी है |
स्वप्न मसृण
या यहॉ हमी अपना सपना है |"

तो एक जगह सॉझ की उदासी को वे काव्य में वद्ध करते है -
"निशा के वाद उषा है किन्तु
देख वुझता रवि का आलोक
अकारणा होकर सहसा मौन
ज्योति को देते विदा सशोक"

2)निवेदनात्मक या इतिवृत्तात्मक शैली -

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net